Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

सिंधु घाटी सभ्यता और सांस्कृतिक परंपरा

: प्रस्तुत कर्ता :

दिलीपसिंह दानाभाई राजपुत

(पीएच.डी शोधार्थी)

मोबाइल नंबर : 9925121425, **Email :** dilipgoletar@gmail.com

1. भूमिका

सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीनतम नगर सभ्यताओं में से एक थी, यह सभ्यता अपनी उन्नत नगर-योजना, सामाजिक संगठन, आर्थिक व्यवस्था तथा विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। प्रस्तुत शोध लेख में सिंधु घाटी सभ्यता की सांस्कृतिक विशेषताओं– धार्मिक विश्वास, कला, शिल्प, सामाजिक जीवन एवं परंपराओं-का विश्लेषण किया गया है तथा भारतीय संस्कृति पर इसके प्रभाव को स्पष्ट किया गया है।

सिंधु घाटी सभ्यता, जिसे हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे प्राचीन सभ्यता मानी जाती है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो इसके प्रमुख नगर थे। इस सभ्यता की खोज ने भारतीय इतिहास और संस्कृति की प्राचीनता को सिद्ध किया।

2. सिंधु घाटी सभ्यता का संक्षिप्त परिचय

सिंधु घाटी सभ्यता का नाम सिंधु नदी के कारण पड़ा, हालाँकि इसके अधिकांश स्थल घग्गर-हकरा नदी क्षेत्र में पाए गए हैं। यह एक पूर्ण विकसित नगरीय सभ्यता थी, जिसमें

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

सुनियोजित नगर, पक्की ईंटों के मकान, जल निकासी प्रणाली और सार्वजनिक भवन पाए जाते हैं। सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीनतम नगरीय सभ्यताओं में से एक थी, जिसका विकास लगभग 2600 ई.पू. से 1900 ई.पू. के बीच हुआ। इसका विस्तार वर्तमान पाकिस्तान और भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में था। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो इसके प्रमुख नगर थे।
यह सभ्यता अपनी सुनियोजित नगर-योजना, पक्की ईंटों के मकान, उन्नत जल-निकासी प्रणाली और व्यवस्थित सामाजिक जीवन के लिए प्रसिद्ध थी। यहाँ के लोग कृषि, पशुपालन और व्यापार पर आधारित जीवन जीते थे। सिंधु घाटी सभ्यता शांतिप्रिय, समृद्ध और उच्च सांस्कृतिक स्तर वाली सभ्यता मानी जाती है, जिसने भारतीय संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3. सांस्कृतिक परंपराएँ

1. धार्मिक विश्वास

- सिंधु सभ्यता के लोग प्रकृति-पूजक थे। खुदाई से प्राप्त मुहरों पर योगासन में बैठे एक देवता की आकृति मिली है, जिसे 'पशुपति शिव' का प्रारंभिक रूप माना जाता है। मातृदेवी की मूर्तियाँ शक्ति उपासना की ओर संकेत करती हैं। वृक्ष और पशु पूजा के प्रमाण भी मिलते हैं।
- सिंधु घाटी सभ्यता के धार्मिक विश्वास प्रकृति-पूजा पर आधारित थे। यहाँ के लोग मातृदेवी की उपासना करते थे, जो उर्वरता और सृजन की प्रतीक मानी जाती थी। खुदाई से प्राप्त अनेक मातृदेवी की मूर्तियाँ इसके प्रमाण हैं।
- मुहरों पर अंकित योगासन में बैठे देवता को विद्वान पशुपति शिव का प्रारंभिक रूप मानते हैं, जिससे शिव-पूजा और योग परंपरा की प्राचीनता सिद्ध होती है। इसके अतिरिक्त वृक्ष पूजा और पशु पूजा के भी प्रमाण मिलते हैं।
- सिंधु सभ्यता में किसी विशाल मंदिर या धार्मिक भवन के स्पष्ट प्रमाण नहीं मिले हैं, जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि धार्मिक जीवन सरल और व्यक्तिगत आस्था पर आधारित था। ये धार्मिक परंपराएँ आगे चलकर भारतीय संस्कृति में विकसित हुईं।

2. सामाजिक जीवन

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

- यह सभ्यता शांतिप्रिय और संगठित समाज का उदाहरण प्रस्तुत करती है। सामाजिक समानता के संकेत मिलते हैं क्योंकि मकानों की संरचना में अत्यधिक भेद नहीं पाया जाता। स्त्री और पुरुष दोनों का समाज में महत्वपूर्ण स्थान था।सिंधु घाटी सभ्यता का सामाजिक जीवन सुव्यवस्थित, शांतिप्रिय और संगठित था। समाज में अनुशासन और समानता के स्पष्ट संकेत मिलते हैं, क्योंकि आवासों की संरचना में अत्यधिक भेद नहीं पाया जाता। इससे वर्गभेद कम होने का अनुमान लगाया जाता है।
- स्त्री और पुरुष दोनों का समाज में महत्वपूर्ण स्थान था। स्त्रियाँ आभूषण पहनती थीं और घरेलू जीवन में सक्रिय भूमिका निभाती थीं। लोग स्वच्छता पर विशेष ध्यान देते थे, जिसका प्रमाण उन्नत जल-निकासी प्रणाली से मिलता है।
- समाज का मुख्य आधार कृषि, पशुपालन और व्यापार था। लोग सामूहिक जीवन जीते थे और सामाजिक नियमों का पालन करते थे। कुल मिलाकर सिंधु घाटी सभ्यता का सामाजिक जीवन संतुलित और सभ्य था।

3. कला और शिल्प

- सिंधु सभ्यता के लोग कला और शिल्प में निपुण थे। मुहरें, कांस्य की मूर्तियाँ (नृत्यांगना), मनके, आभूषण, मिट्टी के बर्तन और खिलौने उनकी कलात्मक रुचि को दर्शाते हैं। मिट्टी और धातु शिल्प का उच्च स्तर देखने को मिलता है।
- सिंधु घाटी सभ्यता का सामाजिक जीवन सुव्यवस्थित, शांतिप्रिय और संगठित था। समाज में अनुशासन और समानता के स्पष्ट संकेत मिलते हैं, क्योंकि आवासों की संरचना में अत्यधिक भेद नहीं पाया जाता। इससे वर्गभेद कम होने का अनुमान लगाया जाता है।
- स्त्री और पुरुष दोनों का समाज में महत्वपूर्ण स्थान था। स्त्रियाँ आभूषण पहनती थीं और घरेलू जीवन में सक्रिय भूमिका निभाती थीं। लोग स्वच्छता पर विशेष ध्यान देते थे, जिसका प्रमाण उन्नत जल-निकासी प्रणाली से मिलता है।
- समाज का मुख्य आधार कृषि, पशुपालन और व्यापार था। लोग सामूहिक जीवन जीते थे और सामाजिक नियमों का पालन करते थे। कुल मिलाकर सिंधु घाटी सभ्यता का सामाजिक जीवन संतुलित और सभ्य था।

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

4. वस्त्र एवं आभूषण

- सूती वस्त्रों के प्रयोग के प्रमाण मिलते हैं। पुरुष और महिलाएँ दोनों आभूषण पहनते थे, जिनमें कंगन, हार, अंगूठियाँ और मुकुट शामिल थे। सोना, चाँदी और कीमती पत्थरों का प्रयोग किया जाता था।
- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग वस्त्र और आभूषणों के प्रयोग में उन्नत थे। खुदाई से प्राप्त प्रमाणों से ज्ञात होता है कि वे सूती वस्त्र पहनते थे और कपास का उत्पादन जानते थे। पुरुष सामान्यतः कमर के नीचे धोतीनुमा वस्त्र पहनते थे, जबकि स्त्रियाँ शरीर पर वस्त्र लपेटती थीं।
- पुरुष और स्त्री दोनों आभूषण पहनते थे। आभूषणों में हार, कंगन, चूड़ियाँ, अंगूठियाँ, कर्णफूल और मुकुट प्रमुख थे। इन्हें सोना, चाँदी, तांबा, मनके, शंख और कीमती पत्थरों से बनाया जाता था।
- आभूषण न केवल सौंदर्य के लिए बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतीक भी थे। इससे सिंधु घाटी सभ्यता की सौंदर्यबोध और समृद्ध संस्कृति का पता चलता है।

5. आर्थिक एवं व्यापारिक संस्कृति

- कृषि, पशुपालन और व्यापार उनकी अर्थव्यवस्था के मुख्य आधार थे। मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संबंधों के प्रमाण मिले हैं, जो उनकी सांस्कृतिक संपर्क और विनिमय को दर्शाते हैं। सिंधु घाटी सभ्यता की अर्थव्यवस्था कृषि, पशुपालन और व्यापार पर आधारित थी। लोग गेहूँ, जौ, कपास आदि की खेती करते थे तथा बैल, भेड़ और बकरियाँ पालते थे। कपास का उत्पादन इस सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषता थी।
- यहाँ के लोग आंतरिक और बाह्य व्यापार दोनों करते थे। व्यापार वस्तु-विनिमय प्रणाली पर आधारित था। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से प्राप्त मुहरें, बाट और तौल उनके सुव्यवस्थित व्यापारिक तंत्र को दर्शाते हैं।
- मेसोपोटामिया जैसी सभ्यताओं से व्यापारिक संबंधों के प्रमाण मिले हैं। इस प्रकार सिंधु घाटी सभ्यता की आर्थिक एवं व्यापारिक संस्कृति उन्नत, संगठित और समृद्ध थी।

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

4. भारतीय संस्कृति पर प्रभाव

सिंधु घाटी सभ्यता की कई सांस्कृतिक परंपराएँ आज भी भारतीय समाज में विद्यमान हैं, जैसे योग, मातृदेवी की पूजा, स्वच्छता पर बल, ग्रामीण जीवन की संरचना और कुटीर उद्योग। यह सभ्यता भारतीय संस्कृति की आधारशिला मानी जाती है। सिंधु घाटी सभ्यता ने भारतीय संस्कृति पर गहरा और दीर्घकालिक प्रभाव डाला। इसके कुछ प्रमुख प्रभाव इस प्रकार हैं:

1. **धार्मिक परंपराएँ**
    - मातृदेवी की पूजा, पशु और वृक्ष पूजा जैसी प्रथाएँ आगे चलकर हिंदू धर्म की सांस्कृतिक परंपराओं में विकसित हुईं।
2. **योग और ध्यान**
    - मुहरों में योगासन में बैठे देवता के चित्र से योग और ध्यान की प्राचीन परंपरा का संकेत मिलता है।
3. **स्वच्छता और नगर योजना**
    - शौचालय, जल निकासी और स्वच्छता पर विशेष ध्यान, भारतीय नगर जीवन और स्वास्थ्य परंपराओं में देखा जा सकता है।
4. **कला और शिल्प**
    - आभूषण, मूर्तियाँ और मिट्टी के बर्तन आज भी भारतीय लोककला और हस्तशिल्प परंपरा में परिलक्षित होते हैं।
5. **कृषि और व्यापार**
    - कृषि प्रधान जीवन और व्यापारिक दृष्टिकोण भारतीय समाज की आर्थिक परंपराओं का आधार बने।

इस प्रकार, सिंधु घाटी सभ्यता भारतीय संस्कृति की जड़ और आधारशिला मानी जाती है।

6. निष्कर्ष

सिंधु घाटी सभ्यता न केवल एक उन्नत नगरीय सभ्यता थी, बल्कि इसकी सांस्कृतिक परंपराएँ अत्यंत समृद्ध और व्यवस्थित थीं। इसके धार्मिक विश्वास, सामाजिक संगठन, कला और जीवन शैली ने भारतीय संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया। अतः यह कहा जा सकता है कि सिंधु घाटी सभ्यता भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की जननी है।

: संदर्भ ग्रंथ :

1. मार्शल, जॉन, मोहनजोदड़ो और सिंधु सभ्यता, (Mohenjo-daro and the Indus Civilization)

2. व्हीलर, आर. ई. एम., सिंधु घाटी सभ्यता, (The Indus Civilization)

3. पिग्गट, स्टुअर्ट, प्रागैतिहासिक भारत, (Prehistoric India)

4. अग्रवाल, डी. पी., प्राचीन भारत की पुरातत्त्विक संस्कृति, (Archaeology of India)

5. शर्मा, रामशरण, भारत का प्राचीन इतिहास

6. थापर, रोमिला, प्रारंभिक भारत का इतिहास, (Early India: From the Origins to AD 1300)

7. पांडेय, वी. सी., प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास

8. चक्रवर्ती, दिलीप के., भारत का पुरातत्त्व, (Archaeology of India)

9. अल्टेकर, ए. एस. - प्राचीन भारतीय संस्कृति